COURSE- PERSPECTIVES ON INDIAN SOCIETY

Unit 4 -Civilizational Perspective

By Dr Malti

Dept. of Sociology

सभ्यता (सभ्यतामूलक) परिप्रेक्ष्य
[CIVILIZATION VIEW]

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। **मजूमदार** (Majumdar) ने तो संस्कृति को ही मनुष्य का जीवन माना है। मनुष्य अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति संस्कृति के माध्यम से करते हैं। संस्कृति में धर्म, कला, विज्ञान, विश्वास, रीति-रिवाज, रहन-सहन तथा मानव द्वारा निर्मित सभी वस्तुएँ सम्मिलित की जाती हैं। यही वस्तुएँ उसका सांस्कृतिक पर्यावरण कहलाती हैं। भौगोलिक पर्यावरण के विपरीत, सांस्कृतिक पर्यावरण मानव निर्मित होता है। प्रत्येक समाज की अपनी सामूहिक जीवन प्रणाली होती है। उसकी कला, विश्वास, ज्ञान आदि विशेष ढंग के होते हैं जिसे हम सामान्य अर्थों में संस्कृति के अन्तर्गत रख सकते हैं। मनुष्य ने अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अनेक साधनों का निर्माण किया है। इन साधनों को दो प्रमुख रूपों में बाँटा जा सकता है—भौतिक तथा अभौतिक। दोनों का सम्बन्ध संस्कृति से ही है। संस्कृति में हम सभी मानव-उपलब्धियों (भौतिक एवं अभौतिक) के सम्पूर्ण योग को सम्मिलित करते हैं। यही उपलब्धियाँ पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होती रहती हैं। संस्कृति के भौतिक पक्ष को ही सभ्यता कहा जाता है।

सभ्यता का अर्थ एवं परिभाषाएँ
(Meaning and Definitions of Civilization)

सभ्यता के अन्तर्गत वे चीजें आती है जिसका उपयोग करके व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। सभ्यता का सम्बन्ध उन भौतिक साधनों से है जिनमें उपयोगिता का तत्त्व पाया जाता है जैसे कि उद्योग, आवागमन के साधन, मुद्रा इत्यादि। मानव की विविध प्रकार की आवश्यकताओं की पूर्ति के साधनों या माध्यमों को हम सभ्यता कह सकते हैं। मैथ्यू आरनोल्ड, अल्फ्रेड वेबर तथा मैकाइवर आदि विद्वानों ने संस्कृति के भौतिक पक्ष को ही सभ्यता कहा है।

सभ्यता शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के 'Civitas' तथा 'Civis' शब्दों से हुई है जिनका अर्थ क्रमशः 'नगर' तथा 'नगर निवासी' हैं। इस दृष्टि से सभ्यता का अर्थ उन नगरों या नगर निवासियों से है जो एक स्थान पर स्थायी रूप से निवास करते हैं, शिक्षित हैं तथा जिनका व्यवहार जटिल है। अन्य शब्दों में उच्च एवं विकसित संस्कृति को ही सभ्यता कहा जाता है।

प्रमुख विद्वानों की निम्नलिखित परिभाषाओं से इसका अर्थ स्पष्ट हो जाता है—

(1) **मैकाइवर एवं पेज** (MacIver and Page) के अनुसार—"सभ्यता से हमारा अर्थ उस सम्पूर्ण प्रविधि तथा संगठन से है जिसे कि मनुष्य ने अपने जीवन की दशाओं को नियन्त्रित करने के प्रयत्न से बनाया है।"[44]

---

44. R. M. MacIver and C. H. Page, **Society : An Introductory Analysis**, p. 498.

(2) **ग्रीन** (Green) के अनुसार—"एक संस्कृति तभी सभ्यता बनती है जब उसके पास एक लिखित भाषा, विज्ञान, दर्शन, अत्यधिक विशेषीकरण वाला श्रम-विभाजन, एक जटिल तकनीकी तथा राजनीतिक पद्धति हो।"[45]

इस प्रकार, कहा जा सकता है कि मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति के माध्यम या साधन सभ्यता के परिचायक होते हैं। सभ्यता के अन्तर्गत उन समस्त साधनों को सम्मिलित किया जाता है, जो मानव की विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति से सम्बन्धित होते हैं तथा मानवीय जीवन के लिए आवश्यक होते हैं।

सभ्यता की प्रमुख विशेषताएँ
(Main Characteristics of Civilization)

सभ्यता की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(1) **आवश्यकताओं की पूर्ति का साधन** (Means to satisfy wants)—आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु मानव द्वारा सभ्यता के विभिन्न साधनों का उपयोग किया जाता है। दूसरे शब्दों में, यह कहा जा सकता है कि सभ्यता मानव की किसी न किसी आवश्यकता की पूर्ति करती है।

(2) **परिवर्तनशील** (Changeable)—मानव की आवश्यकताओं में वृद्धि के साथ-साथ परिवर्तन होता रहता है। इसके परिणामस्वरूप आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाले साधनों में भी परिवर्तन होता जाता है। जैसे पहले ठण्डे पानी के लिए मिट्टी के घड़े का इस्तेमाल होता था परन्तु आजकल कूलर या फ्रिज का इस्तेमाल किया जाता है।

(3) **संचरणशील** (Communicable)—सभ्यता में उपयोगिता का तत्त्व अधिक मात्रा में होता है। इसी कारण सभ्यता एक स्थान से दूसरे स्थान तक तीव्रता से फैल जाती है। चाहे कोई दवाई हो या उन्नत ढंग का कपड़ा, जैसे ही किसी देश में इसका आविष्कार होता है बहुत कम समय में सम्पूर्ण विश्व में इसका प्रसार हो जाता है।

(4) **अग्रसर होना** (Proceeding forward)—सभ्यता निरंतर आगे बढ़ती रहती है। अगर यातायात के साधनों को देखें तो पता चलता है कि प्रत्येक आविष्कार से गति की मात्रा बढ़ी है। पहले बैलगाड़ी, फिर मोटर व रेलगाड़ी और आजकल ध्वनि के वेग की गति से भी तेज उड़ने वाले विमानों का आविष्कार हो चुका है।

(5) **बाह्य आचरणों से सम्बन्धित** (Concerned with outward conduct)—सभ्यता मानव के बाहरी आचरणों से सम्बन्धित होती है। समाज में जो बाहरी आचरण किया जाता है वह सभ्यता का परिचायक माना जाता है। उदाहरणार्थ, हमारे कपड़े हमारी सभ्यता के परिचायक हैं।

(6) **प्रविधियों से सम्बन्धित** (Concerned with techniques)—सभ्यता के अन्तर्गत मानव-जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाले उपकरणों का समावेश होता है।

(7) **भौतिक स्वरूप** (Material nature)—सभ्यता का स्वरूप भौतिक होता है। इसको देखा व स्पर्श किया जा सकता है। इस संसार में जितने भी भौतिक उपकरण एवं साधन है, जोकि हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति से सम्बन्धित हैं, उन्हें हम सभ्यता के अन्तर्गत ही रखते हैं।

(8) **साधन है, साध्य नहीं** (Mean, not an end)—सभ्यता हमारी विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति का साधन मात्र है।

सभ्यता (सभ्यतामूलक) परिप्रेक्ष्य का अर्थ
(Meaning of Civilization Perspective)

सभ्यता परिप्रेक्ष्य का अर्थ सामाजिक वास्तविकता के अध्ययन में 'सभ्यता' को आधार बिन्दु मानना है। चूँकि सभ्यता के निश्चित मापदण्ड हैं, अतः इसके द्वारा किए जाने वाले अध्ययन अधिक वस्तुनिष्ठ एवं वैज्ञानिक प्रकृति के होते हैं। विभिन्न समाजों के अध्ययन में यह परिप्रेक्ष्य अत्यन्त उपयोगी परिप्रेक्ष्य माना जाता है। भारतीय समाज के सन्दर्भ में एन० के० बोस एवं सुरजीत सिन्हा ने इस परिप्रेक्ष्य को अपनाया है। इनका कहना है कि यदि हम भारतीय समाज को समझना चाहते हैं तो भारतीय सभ्यता को समझना अनिवार्य है। सभ्यता ही समाज का दर्पण है तथा इसी से समाज की संरचना एवं विशिष्ट लक्षणों का परिचय प्राप्त होता है।

सभ्यता (सभ्यतामूलक) परिप्रेक्ष्य का तात्पर्य उस सम्पूर्ण व्यवस्था एवं संगठन के अध्ययन से है जिसका निर्माण मनुष्य अपनी जीवन दशाओं को नियन्त्रित करने के क्रम में करता है। सभ्यता परिप्रेक्ष्य साधनों से जुड़ा है इसलिए वह अपने चरित्र में बर्हिमुखी अथवा बाह्य एवं उपयोगितामूलक है। सभ्यता परिप्रेक्ष्य के द्वारा किए जाने वाले अध्ययन की प्रमुख विशेषताएँ निम्नांकित हैं—

(1) सभ्यता परिप्रेक्ष्य के अन्तर्गत किए गए अध्ययनों का एक निश्चित मानक अथवा मापदण्ड होता है।

(2) सभ्यता परिप्रेक्ष्य के अन्तर्गत किए गए अध्ययनों का प्रसार शीघ्रता और सरलता से होता है। संचार साधनों ने इस परिप्रेक्ष्य के अध्ययनों की वृद्धि में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

(3) सभ्यता परिप्रेक्ष्य के अन्तर्गत किए गए अध्ययनों के प्रभाव दूरगामी होते हैं।

(4) सभ्यता परिप्रेक्ष्य के अन्तर्गत किए गए अध्ययनों में औपचारिक संगठनों एवं उनके नियन्त्रण का अध्ययन किया जाता है।

एन० के० बोस : जीवन-चित्रण एवं प्रमुख कृतियाँ
[N. K. BOSE : LIFE-SKETCH AND MAIN WORKS]

बोस प्रथम पीढ़ी के मानवशास्त्रियों एवं समाजशास्त्रियों में से हैं। उनकी गणना गांधीवादी विचारकों में भी की जाती है। गांधी जी के साथ रहते हुए बोस ने उनके द्वारा चलाए गए अनेक सामाजिक आन्दोलनों में सक्रिय भूमिका निभाई। 1901 ई० में जन्मे निर्मल कुमार बोस की प्रारम्भिक शिक्षा पटना के स्कूलों में हुई तथा स्नातक स्तर की शिक्षा कलकत्ता के प्रेजीडेन्सी कॉलेज में हुई। इसी कॉलेज से उन्होंने भूगर्भशास्त्र में एम० एस-सी० में प्रवेश लिया परन्तु गांधी जी के असहयोग आन्दोलन के कारण वे अपना अध्ययन बीच में ही छोड़कर पुरी में जा बसे। बाद में 1925 ई० में उन्होंने मानवशास्त्र विषय में एम० एस-सी की उपाधि प्राप्त की। प्रागैतिहासिक पुरातत्त्व विभाग तथा मानवीय भूगोल विभाग में बोस अध्यापक भी रहे। कैलीफोर्निया, बर्कले तथा शिकागो विश्वविद्यालयों में व्याख्यान देकर बोस ने अपनी बौद्धिक क्षमताओं का परिचय दिया। 1959 ई० में बोस भारत के मानवशास्त्रीय सर्वेक्षण संस्थान के निदेशक नियुक्त किए गए जहाँ पर उन्होंने पाँच वर्ष तक कार्य किया। इसी अवधि में उन्होंने भारत सरकार को जनजातीय मामलों में सलाह भी दी। 1967-70 ई० के बीच वे अनुसूचित जातियों एवं अनुसूचित जनजातियों के कमिश्नर भी रहे। इन पिछड़े वर्गों के अध्ययनों में 'सर्वाधिक कमजोर कड़ी' की अवधारणा बोस ने ही प्रतिपादित की। 1972 ई० में उनकी मृत्यु हो गई। बोस ने लगभग 40 पुस्तकें तथा अनेक लेख अंग्रेजी, बंग्ला एवं हिन्दी भाषाओं में लिखे। बोस पर अमेरिकी प्रसारवाद तथा प्रकार्यवाद का अत्यधिक प्रभाव था। उन्होंने घुरिये द्वारा

लिखित पुस्तक *'Cities and Civilization'* की विषय-वस्तु जुटाने में और उससे सम्बन्धित लेख लिखने में उनका सहयोग किया।

बोस द्वारा लिखित प्रमुख पुस्तकें निम्नलिखित हैं—

(1) *Cultural Anthropology (1929);*
(2) *Canons of Orrisian Architecture (1932);*
(3) *Excavations in Mayurbang (1949);*
(4) *Cultural Anthropology and Other Essays (1953);*
(5) *Calcutta – A Social Survey (1964);*
(6) *Culture and Society in India (1967);*
(7) *Problems of National Integration (1967);*
(8) *Problems of Nationalism (1969);* तथा
(9) *Tribal Life in India (1971)*।

बोस का सभ्यता परिप्रेक्ष्य
[CIVILIZATION PERSPECTIVE OF BOSE]

बोस ने नगर और सभ्यता को विभिन्न आयामों की दृष्टि से देखने का प्रयास किया है। यदि सभ्यता के मानवशास्त्रीय अर्थ को स्वीकार किया जाता है तो उसका तात्पर्य एक समय विशेष के लोगों के खान-पान, रहन-सहन, भवन एवं सड़क निर्माण, सार्वजनिक स्थानों, कुओं, तालाबों, उद्योगों के संगठित रूप से है। उदाहरण के लिए—जब हम कहते हैं कि हड़प्पा और मोहनजोदड़ो की सभ्यता, तो इसका तात्पर्य इन दोनों स्थलों पर एक समय विशेष में किए गए भौतिक निर्माण, कृषि, व्यापार, उद्योग, राजनीतिक व्यवस्था, अर्थव्यवस्था, धर्म, शिक्षा तथा सामाजिक व्यवस्था से है। बोस का विचार था कि संस्कृति के समक्ष मानव पूर्णतया निष्क्रिय नहीं होता, वह संस्कृति में बदलाव लाने में भी सक्षम है। इतिहास के पन्ने ऐसे उदाहरणों से भरे हैं जब किसी एक व्यक्ति या कुछ व्यक्तियों में संस्कृति के प्रवाह को बदल दिया है।

यदि हम सभ्यता को समाजशास्त्रीय अर्थ के रूप में विवेचित करते हैं तो पाएँगे कि समाजशास्त्रियों ने मानव के चारों ओर निर्मित वातावरण में दो बातें प्रमुखतः पाई हैं—एक अभौतिक चीजें; जैसे—प्रथाएँ, परम्पराएँ, आर्थिक, राजनीतिक एवं सामाजिक व्यवस्थाएँ जिन्हें संस्कृति कहा गया है; तथा दूसरा पर्यावरण का भौतिक पक्ष; जैसे—मकान, घड़ी, पेन, मशीनें, पुस्तकें आदि, जिसको सभ्यता कहा गया है। बोस ने सभ्यता का प्रयोग इसी अर्थ में किया है। उन्होंने संस्कृतियों के विश्लेषण और वर्गीकरण में हिन्दू ग्रन्थों की कसौटियों को प्रयोग करने का भी सुझाव दिया। उनके विचारानुसार केवल भौतिक वस्तुएँ ही किसी सभ्यता का एकमात्र आइना नहीं होती, अतः उस समय के तत्त्वज्ञान पर भी ध्यान दिया जाना आवश्यक है।

बोस ने भारतीय नगरों के उद्गम, उद्विकास तथा उद्विकास के कारकों का उल्लेख किया है। उन्होंने नगरों को सभ्यता का केन्द्र माना है। इस अर्थ में नगर आस-पास के गाँवों की आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक और सामाजिक क्रियाओं के केन्द्र हैं। नगरों ने ही मानव की सभ्यता को जन्म दिया है। वे सभ्यताओं की जन्मस्थली हैं। नगरों में ही सभ्यता फलती-फूलती है। दूसरी सभ्यताएँ भी नगरों के विकास में अपनी भूमिका अदा करती हैं। इस प्रकार से सभ्यता और नगर परस्पर आश्रित हैं और एक-दूसरे के साथ अन्तर्क्रिया करते हैं जिससे पुराने समाज के स्थान पर नए समाज का निर्माण होता है।

बोस ने भारतीय सभ्यता और संस्कृति की संरचना पर कार्य कर इसकी परिवर्तनशील प्रकृति को उजागर किया है। भाारतीय सभ्यता के लम्बे इतिहास की खोजबीन करते हुए बोस ने यह निष्कर्ष निकाला है कि भारत में कई स्तरों पर भिन्नता होते हुए भी इसमें एकता के मूलतत्त्व विद्यमान हैं। यद्यपि भारतवासियों में धर्म, भाषा, समुदाय, प्रजाति, क्षेत्र, व्यवसाय, भौतिक सम्पदा इत्यादि के आधार पर भिन्नता पाई जाती है, तथापि उनमें कई लक्षणों, प्रथाओं, परम्पराओं एवं विश्वासों में एकरूपता भी पाई जाती है। उनका विचार था कि भौतिक जीवन के स्तर पर जो अत्यधिक भिन्नताएँ देखने को मिलती हैं, वे भी तब धीरे-धीरे कम होती जाती हैं जब हम ऊपर की ओर जीवन के उच्च आदर्शों के लिए आगे बढ़ते जाते हैं। उन्होंने जाति व्यवस्था का मार्क्सवादी विश्लेषण भी किया है। इस सन्दर्भ में उन्होंने जाति व्यवस्था के दैवीय उत्पत्ति के सिद्धान्त के साथ-साथ पुनर्जन्म की धारणा तथा पवित्रता-अपवित्रता के विचारों को स्वीकार नहीं किया है। उनका विचार था कि हिन्दू सभ्यता की विश्व दृष्टि पूरी तरह से समन्वयवादी है। इसमें किसी एक विश्व दृष्टि को दूसरी विश्व दृष्टि से श्रेष्ठ नहीं माना गया है।